मेरी ख्वाइशें

डॉ॰ अरिंदम दास
असोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी
अलायंस विश्वविद्यालय

समेट लेना तेरे आँचल में मेरे बिखरे हुए दिल के टुकड़ों को
बिखेर देना आसमाँ पे, कि सितारे झिलमिला उठेंगे ॥

समेट लेना तेरे ज़ुल्फों में मेरे बिखरे हुए दिल के टुकड़ों को
बिखेर देना गुलफाम में कई गुल रंग-बिरंगे खिल उठेंगे ॥

समेट लेना तेरे हाथों में मेरे बिखरे हुए दिल के टुकड़ों को
बिखेर देना समंदर की लहरों में कि सैलाब उमंगों में नाच उठेंगे ॥

समेट लेना तेरी नजरों की चिलमन में मेरे बिखरे हुए दिल के टुकड़ों को
बिखेर देना सावन की घटाओं में कि बारिश आँसू बनके छलक जाएँगे ॥